ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास और नारी चेतना

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor in Hindi, SPNKS Government PG College, Dausa, Rajasthan, India

सारांश

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास स्पष्ट करते हैं कि देश के स्वतंत्र होने के साथ स्थिति बदली है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी आगे बढ़ी है। उसे खुला एवं मुक्त वातावरण मिला है लेकिन शहरों तक, ग्रामीण स्तर पर नारी के जीवन में कोई बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं आया है। लेखिका की नायिकाएँ पुरुष सत्ता के वर्चस्व को तोड़ना चाहती है। उसे स्वामी नहीं, पति नहीं, एक सुलझा हुआ सहयात्री चाहिए जो सुख-दुख में कदम से कदम मिलाकर साथ चल सके।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चेतना के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ रामचंद्र तिवारी लिखते हैं "बुंदेलखंड के आंचलिक जीवन को उसकी समग्रता में उकेरते हुए यह दिखाया है कि अब विंध्याचल की धरती भी अंगड़ाई लेकर जाग रही है। अनेक स्तरों पर नारी को पीड़ित और प्रताड़ित होते दिखाया गया है। लेखिका ने यह संकेत दिया है कि अब ठेठ ग्रामीण और लगभग अशिक्षित नारियाँ भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रही है और उनमें भी जनता को संगठित करने का साहस और अपनी शक्ति का एहसास होने लगा है।"

लेखिका का मत है जो सर्वथा सत्य प्रतीत होता है कि नारी शिक्षा और स्वावलंबन के बल पर कहीं हद तक अपनी समस्याओं का समाधान कर सकती है। "स्त्रियों को चाहिए कि वे पुरुषों को झुकाने से पहले अपना हीन भाव दूर करें।"

उसकी स्वतंत्रता का मूल्य पुरुष की नजरों में नहीं अपितु नारी की अपनी तथा अपनी तथा नारी समाज की नजरों में भी होना चाहिए। लेखिका के नारी पात्र न केवल अपने व्यक्तिगत हित के लिए संघर्ष करते हैं अपितु समाज के लिए भी संघर्ष करते नजर आते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी प्रकार के संघर्षों को स्थान मिला परंतु प्रधानता नारी संघर्ष की है। जिसका उद्देश्य सकारात्मक सोच एवं साधनों द्वारा सभ्य समाज का निर्माण करना है। समाज को सही दिशा निर्देशित करता है।

परिचय

हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली ,स्त्रियों के दुःख पीड़ा एवं सामाजिक स्थिति को अपनी लेखनी से उकेरने में महारथ हासिल मैत्रेयी का जन्म 30 नवंबर सन् 1944 को अलीगढ़ के सीकरी गांव में हुआ था। उन्होंने कॉलेज के दिनों से ही लिखना प्रारंभ किया इनकी पहली कविता बाड़े में काम करने वाली महिलाओं पर थी जिसके कारण इन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा वह जिस बाड़ें में रहकर पढ़ती थी अखबार में कविता के छपने के बाद उस बाड़े में रहने वाले लोग उस कविता को पढ़कर उत्तेजित हो गये और इन्हें अपना कमरा खाली करना पड़ा। इनका कविता संग्रह 'खुली खिड़कियां' तथा 'लकीरें' साहित्य के क्षेत्र में एक नया आयाम लाने की कोशिश है ।अपने काव्य संग्रह 'खुली खिड़कियों' के माध्यम से उन्होंने नारी की वास्तविक स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जीवन के सत्य को उजागर करने का माध्यम गद्य को बनाया क्योंकि मानव जीवन के यथार्थ चित्रण में कहानी एवं उपन्यासों जैसी क्षमता अन्य किसी साहित्यिक विधा को नही है। इन्होंने अपने जिये हुये परिवेश को सहजता, सरलता , स्वाभाविकता से अत्यंत संतुलित शब्दों में अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है जिसे पढ़कर लगता है कि यह केवल रचनायें नहीं है समाज का दस्तावेज है। मैत्रेयी पुष्पा जी के लगभग दस उपन्यास एवं तीन कहानी संग्रह प्रकाशित है। उनके उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की एक झलक स्पष्ट दिखाई देती है नारी शोषण के प्रति विद्रोह वृद्धों, अशिक्षित विधवा नारियों का चित्रण अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में लेखिका ने अपने विचार, विद्रोह एवं अनुभव के साथ चित्रित किये हैं।

विद्रोह से मनुष्य की आजादी संभव होगी ।नारी विद्रोह एक दिन की सृष्टि नहीं है कई वर्षों से शोषित नारी मानसिकता की कालानुसृत परिणति है। मैत्रेयी के कथा संसार की नारी शोषण के प्रति विद्रोह करने के साथ-साथ अपने ऊपर के बंधनों को तोड़ने का प्रयास करने लगी। मैत्रेयी के उपन्यास और कहानियां इसका सच्चा मिसाल है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

लेखिका समकालीन परिवेश और समाज में नारी को जो अत्याचार झेलने पड़े उसके विरोध में अपनी आवाज उठाती हैं नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं की भीषणता को अनावृत करने में मैत्रेयी अपने कथा साहित्य द्वारा समर्थ हुयीं हैं।

अपनी पहली कथा 'अपना अपना आकाश' द्वारा लेखिका ने एक वृद्ध ग्रामीण निरक्षर विधवा की निरालंबन की कथा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है' बेटी' 'सहचर' 'बहेलिया' नामक तीन कहानियों में शिक्षा से वंचित होने के कारण शोषण के शिकार बनने वाली नारियों की है। 'मन नहीं दस बीस' में ग्रामीण किसान, नारी शोषण के प्रति विद्रोह आदि का अनुभूतिजन्य चित्रण चंदना, स्वराज वर्मा आदि पात्रों द्वारा लेखिका ने किया है ।आक्षेप में लेखिका ने एक सशक्त नारी पात्र का चित्रण किया है, जो बदनामी की परवाह किये बिना समाज के दुखियों पीड़ितों की मदद के लिये हर समय हाजिर रहती है। 'कृतज्ञ' भी नारी शोषण की कहानी है 'चिह्नार, सरजू की दुःख भरी कहानी है। दिशाहीन पति को स्नेह करने वाली तथा बच्ची अपनी होने पर भी उसकी नौकरानी बनकर जीने वाली सरजू एक शोषित नारी का प्रतीक है। 'सिस्टर' नामक कहानी में डोरोथी डिसूजा नामक नर्स के द्वारा स्त्रियों की कुंठा, निराशा, आत्मनिर्भरता, अकेलापन और वात्सल्य का चित्रण लेखिका ने किया है। 'आज फूल नहीं खिलते' में झरना नामक बच्ची की कहानी है जो गांव से शहर पढ़ने के लिए आती है पर प्रिंसिपल से यौन शोषण भोगना पड़ता है शोषण के विरुद्ध झरना अपनी सारी ताकत लेकर प्रतिक्रिया भी करती है। लेखिका ने अपने हर उपन्यास एवं कहानी में नारी का विद्रोही स्वर मुखरित किया है।

'स्मृतिदंश' मैत्रेयी जी का सबसे पहला उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से मैत्रेयी ने ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली लड़कियों के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।अपने उपन्यास 'बेतवा बहती रही' में बेतवा नदी के किनारे रहने वाली उर्वशी एक भारतीय ग्रामीण नारी का प्रतीक है जिसके पति की मृत्यु के बाद उसे ना चाहते हुए भी अपने से अधिक उम्र के पुरुष से विवाह करना पड़ता है। उपन्यास 'झूलानट'की नायिका शीलू विद्रोही स्वभाव की है वह गांव की संस्कृति और आचार विचार को चुनौती देती है। इदन्नमम मैत्रेयी जी के व्यक्तित्व की पहचान है इसमें उन्होंने शामली और सोनपुरा नामक दो गांवों में रहने वाली तीन पीढ़ियों की औरतों की संवेदनशीलता को दर्शाया है। 'आंगनपाखी' उपन्यास आचार -विचार,व्यवहार द्वारा भारत की जनता के सभ्यता और संस्कार की सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कबूतरा नामक जनजाति के जीवन संघर्ष की कहानी है 'विजन' उपन्यास में लेखिका ने बताया है कि संघर्ष शोषण केवल ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का नहीं होता, पढ़ी-लिखी शहरी कामकाजी महिलाओं को भी झेलना पड़ता है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए अपनी उपस्थिति की पहचान के लिए लड़ना पड़ता है। 'कस्तूरी कुंडल बसै' बेजोड़ उपन्यास है जिसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि यह संघर्ष कस्तूरी से ज्यादा स्वयं मैत्रेयी जी का है। 'कही ईसुरी फाग' रचना के पीछे लेखिका का वह लोकानुराग है जो बचपन से उनकी सामाजिक ,पारिवारिक संस्कृति से संबंधित है।

'कस्तूरी कुंडल बसै' की कस्तूरी मैत्रेयी की मां एक जुझारू नारी थी। वह मैत्रेयी की शादी नहीं करना चाहती थी ,क्योंकि उन्हें लगता था कि किसी तरह अपनी बेटी का बोझ किसी पुरुष के कंधे पर डालना परिवार वालों का लक्ष्य होता है। लड़की को परिवार का शाप समझा जाता है मां का मानना है कि 'संसार में औरतों के मुकाबले कोई सख्त जान नहीं बेटो को रोग-धोग व्यापे पर इसे कभी छींक तक नहीं आयी। अरे गाय मरे अभागे की बेटी मरे सुभागे की, मगर बेटी मरे तो सही।'

गांव में विधवा स्त्री का जीवन नर्क से भी ज्यादा खराब होता है परंतु मैत्रेयी की नारी पात्र इस जीवन का विरोध करते हुए अपना जीवन जीती हैं 'चाक' की नायिका रेशम का पति कर्मवीर की मृत्यु के छःमहीने बाद वह गर्भवती हो गयी। सास के बार-बार पूछने पर भी वह किसी का नाम बताने को तैयार नहीं थी बिना बाप के बच्चे का पालन करने का साहस उसमें था ।गर्भवती रेशम के सामने ससुराल वालों ने एक सुझाव रखा देवर डोरिया को पति के रूप में स्वीकार कर लो लेकिन रेशम आत्मावंचना के लिए तैयार नहीं थी उसने विद्रोही स्वर में नारी से संबंधित एक सच्चाई सास से पूछी 'तुम्हारे पूत की चिता ठंडी हो जाने से क्या मेरी देह की आग बुझ जाती? बिना बाप के बालक को भगवान पाप मानता तो हमारी विधवा की कोख में डालता।'

मैत्रेयी के नारी पात्र का मानना है कि पतिव्रता होने पर भी नारी शोषण से मुक्त नहीं होती। 'चाक' में सारंग ने अपनी इच्छा से अपना शरीर श्रीधर को सौंप दिया उसके मन में इसके लिए लेश मात्र भी अपराध बोध नहीं था। सारंग ने नारियों के प्रति समाज की विद्रूप एवं घोर नीतियों के प्रति विद्रोह का स्वर मुखरित किया है ग्रामीण समाज में रहने वाली जाट परिवार की कुलवधू सारंग ने पुरुषसत्तात्मक समाज का सशक्त रूप से विरोध करते हुये अपने पति के समक्ष बंदूक उठा लेने वाली सशक्त और हिम्मती पात्र है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

विधवा बहू कुसुम के चरित्र में लेखिका ने विद्रोह लाने की कोशिश की है विधवा होने पर भी उसने दूसरी जिंदगी न स्वीकार करके अपने बेटे की देखभाल की जिम्मेदारी अकेली निभायी। बेटे की हत्या के बाद बहू अपनी बच्ची मंदा को छोड़कर चली गयी चलते समय मंदा को उसने ले लिया मंदा को सुरक्षा के लिए उसे लेकर शामली, समथर ,ओरछा, बिरगांव जाना पड़ा सोनपुर का सारा जायदाद छल से नष्ट होने पर भी उसने अपना साहस न छोड़ा । कुसुम एक विद्रोही नारी है अपने पति यशपाल द्वारा उपेक्षित होने पर भी वह ससुराल में रहती थी। वहां के तपेदिक के रोगी अमर सिंह के साथ उसका संबंध हुआ और एक बच्चा भी हुआ बच्चे के जन्म से पहले अमर सिंह मर गया। मंदा को मंदा बनाने में कुसुम की लगातार कोशिश की जीत हुयी। बिरगांव में जब कैलाश मास्टर ने मंदा का बलात्कार किया तब कुसुम ने मार मार कर कैलाश मास्टर की हड्डियां तोड़ डाली और मंदा को धीरज बंधाकर शामली ले गयी। ,सगुना पर मंदा का प्रभाव जरूर पड़ा जब वह समझ गयीं कि अभिलाख के बलात्कार से वह गर्भवती बन गयीं हैं तब अभिलाख की हत्या करने की बहादुरी दिखायी ।

'आंगनपाखी' में मैत्रेयी ने भुवन का परिचय विद्रोहिणी के रूप में कराया है उसकी जिंदगी शोषण से भरपूर थी। वह पढ़ना चाहती थी लेकिन घर वाले उसे कक्षा पांच से आगे पढ़ने नहीं देते हैं और उसको घर से लेकर खेतों के काम में लगा देते हैं उसकी शादी एक बहुत ही पैसे वाले परिवार के पागल पुत्र विजय सिंह के साथ होती है वह उस पागल से तलाक लेना चाहती है पर अम्मा उसे लोक लाज मर्यादा सिखाती हैं वह अपनी अम्मा से पूछती है 'अम्मा ब्याह करना पाप नहीं है तो ब्याह छोड़ना क्यों पाप है '? वह ससुराल के आचार, मर्यादा ,पर्दा प्रथा आदि को दरकिनार कर मंदिर में पूजा करने जाती थी पति को बीमारी से मुक्ति दिलाने के लिए तंत्र विद्या सीखने लगती है विजय की मृत्यु पर सती अनुष्ठान से बचने के लिए वह मंदिर के पुजारी की मदद से वन में चली जाती है। लेखिका ने उसको जुझारू संघर्षशील एवं विद्रोही नारी के रूप में चित्रित किया है।

'कही ईसुरी फाग' की मीरा एक सशक्त आधुनिक नारी पात्र का प्रतीक है उसकी मदद से ऋतु अपने शोध का मटेरियल इकट्ठा करती है। मीरा गांव वाली होते हुये भी एक साधारण सी लड़की की तरह घुंघट डालकर रसोई में नहीं बैठी, उसकी शादी पंद्रह सोलह साल की उम्र में हुयी जब वह आठवीं पास थी बाद में उसने किसी तरह हायर सेकेंडरी पास कर लिया दो बच्चे भी हुए, उसने दिन में घर का सारा काम किया एवं रात में अपनी पढ़ाई ,इस तरह उसने बी.ए पास कर लिया और गांव की अनपढ़ नारियों को पढ़ाना शुरू किया। पूरे समाज का विद्रोह कर आंगनबाड़ी में काम करने लगी मीरा से प्रेरणा पाकर ऋतु ने भी अपना थीसिस पूरा कर लिया था।

'फैसला' कहानी की ईसुरिया गड़ेरिया की पत्नी है, दलित हैं फिर भी वह प्रधानिन वसुमति से ज्यादा साहस दिखाती है जब वसुमति प्रधान पद पर चुनाव जीत गयी तभी ईसुरिया ने कहा 'बराबरी का जमाना आ गया अब ठठरी बांधे मरद मारा कुटी करें, गाली गलौज दे, मायके ना भेजें, पीहर से रुपैया पैसा मंगवाए ,क्या कहते हैं कि दायजे के पीछे सतावे, तो बस बैन सूधी चली जाना बासुमति के डींगे।' ईसूरिया का चित्रण लेखिका ने अलग ढंग से किया है उसके आगे कोई भी हो वह गलत बोलता तो वह ज़वाब जरूर देती ,उसके मन में किसी के प्रति भय नहीं है और वह किसी की गुलाम भी नहीं है। वह घूंघट नहीं डालती गांव के गरीबों की समस्यायें सुलझाती है।हरदेई और रामकिशुन की समस्या के समाधान के लिए वह प्रयत्न करती थी लेकिन असफल हो गयी। ईसुरिया से प्रेरणा पाकर बासुमति ने अपने पति रणवीर को वोट नहीं दिया और एक वोट की कमी के कारण प्रमुख के चुनाव में रणवीर हार गया।

'इदन्नमम' की मंदा एक बहुत ही ईमानदार ,साहसी और विद्रोही पात्र है। क्रेशर ब्लास्टिंग के कारण गांव वालों की खेती बर्बाद होती हैं और लोग चैन से नहीं रह पाते इसलिए सभी मिलकर यह फैसला करते हैं कि मंदा के नेतृत्व में क्रेशर मालिकों के विरुद्ध आंदोलन चलाया जाएगा। मंदा और द्वारिका काका जब अभिलाख से मिलने जाते हैं तो क्रेशर मालिक अभिलाख और मंदा में वाक् युद्ध होता है तथा अभिलाष क्रुद्ध होकर मंदा पर हमला कर देता है। 'अभिलाष ने आव देखा न ताव लपक कर मंदाकिनी के बाल झझोड़ डाला। साली, हरामजादी कहकर गालियां दी ,बांह पकड़कर ऐठ डाली और जहां जहां हाथ गया वहां ठौर देखा न कुठौर, टूट पड़ा भूखे भेड़िए की तरह' इस घटना के पश्चात राउत वर्ग ने अभिलाख के घर पर हमला बोला और मामला पुलिस तक गया। समाज की विडंबना एवं पुरुष सत्तात्मक स्थिति के कारण मंदा को थाने की पुलिस दरोगा और थानेदारों से अपमान सहना पड़ा, मगर मंदा ने हिम्मत नही हारी न पीछे हटी क्रेशर मालिकों के खिलाफ गांव में जागरण फैलाती रही तथा आंदोलन करती रही।

'अल्मा कबूतरी' में भूरी कबूतरी सबसे विद्रोही नारी पात्र है इस उपन्यास की प्रतिनिधि पात्र कदमबाई है जिसके मनमोहक और सुंदर शरीर के लोभवश कज्जे लोग उसके पति जंगलिया को मार काट के मामले में फंसा कर उसकी हत्या करवा देते हैं। कबूतरियों के शारीरिक शोषण तथा शराब पीने के लिए कज्जे पुरुष उनकी बस्ती में आते जाते थे।

अंधेरे में पति की प्रतीक्षा में खेत पर खड़ी कदमबाई के साथ मंसाराम शारीरिक संबंध स्थापित करता है और वह गर्भवती हो जाती है अपने बेटे को बड़ा करने एवं पढ़ाने लिखाने में उसे बहुत शोषण सहना पड़ता है।

'विजन' उपन्यास में दो नेत्र चिकित्सक महिला डॉक्टर आभा और नेहा की कहानी है आभा विद्रोही पात्र है डॉ नेहा अजय की पत्नी होने के साथ साथ शरण आई सेंटर की डॉक्टर तथा डॉक्टर शरण की बहू का कर्तव्य निभाते निभाते थक गयी हैं उनकी अपनी कोई पहचान नहीं रह गई है परंतु उसके भीतर अपने शोषण के प्रति विद्रोह करने की ताकत नहीं थी, इसलिए डॉक्टर नेहा ने डॉक्टर आभा से मदद मांगी।आभा नें अपनी डॉक्टरी के पेशे में बाधा बनने वाले वैवाहिक जीवन को छोड़ने की हिम्मत दिखायी नेत्र चिकित्सा में कुशल डॉ आभा ने अपने पति और ससुराल वालों के व्यर्थ की जिद्द को स्वीकार नहीं किया इसलिए उसने अपने पति को तलाक दे दिया। आभा, नेहा की जिंदगी की मार्गदर्शक है।

अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से लेखिका सिर्फ पढ़ी-लिखी नायिकाओं द्वारा ही नही अनपढ़, ग्रामीण, नारी पात्र द्वारा भी शोषण के प्रति विद्रोह प्रकट करती है। विद्रोह प्रकट करने में' पगला गयी है भागवती' में भागो ने एक अलग रास्ता चुन लिया। जिज्जी की बेटी अनसूया पहले ही मां से उपेक्षित लड़की थी उसका संरक्षण भागो ने किया था, अनसूया के भाई ने अपनी मर्जी के अनुसार रजिस्टर्ड विवाह किया और मां-बाप ने उन्हें बुलाकर धूमधाम से ब्याह कराया। उस समय आशीष देने के लिए माधव सिंह के मंच पर आते वक्त भागो ने पत्थर उठाकर मारा ,सब सोचने लगे भागो पागल हो गयी है पर उसने अपना विद्रोह प्रकट करने के लिये पत्थर फेंका था।

मैत्रेयी पुष्पा अपने कथा साहित्य में भारतीय समाज की नारी को अपने अस्तित्व की लड़ायी के लिए प्रेरित करते हुये उनकी सुसुप्त चेतना को जागृत करने में सक्षम दिखाई देती है। पुरुष सत्तात्मक समाज में गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिये नारी को समाज में व्याप्त रूढ़ियों, परंपरागत अनाचारों, का उल्लंघन करने का साहस दिखाना पड़ेगा, सदियों से चली आ रही परंपरा और रीति-रिवाज को तोड़ती हुई समाज में अपने साथ होने वाले शोषण के प्रति विद्रोहात्मक स्वर को बुलंद करने वाली नारी को लेखिका ने अपनी कथा साहित्य में अलग व्यक्तित्व प्रदान किया ।
मैत्रेई पुष्पा ने नारी समाज को अपने साथ होने वाले हर शोषण के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित किया है अपनी आत्मकथा गुड़िया भीतर गुड़िया में उन्होंने अपने जीवन को भी दर्शाया है अपने साथ होने वाले शोषण के प्रति विद्रोह का स्वर मुखरित किया है तथा अपनी समस्त कहानी एवं उपन्यासों में नारी को सशक्त रूप में प्रदर्शित किया है चाहे वह पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़ हो ।

विचार-विमर्श

हिन्दी साहित्य में बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दौर में नारी चेतना का उदय हुआ है। आज स्त्री समाज के समुचित विकास के लिए पुरुषों के कन्धे में कंधा डालकर आगे बढ़ रही है। इसके द्वारा स्त्री अपनी अलग पहचान, अस्मिता ढूँढ रही है। नारी चेतना नारी अस्मिता से जुड़ा अहसास है। नारी चेतना में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक क्षेत्र में दबी नारी का विरोध और उसके बाहर आने का प्रयास भी है। पुराने काल में स्त्री का आदर मिलता था। कालान्तर में नारी की स्थिति में कमज़ोरी होती गई। लेकिन स्त्री शिक्षा के फलस्वरूप सामाजिक कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज़ उठाने की क्षमता उसमें उभर आई। घर की चार दीवारें तोडकर स्त्री अपना अस्तित्व खोजने का धैर्य दिखाने लगी। वह वर्तमान समाज में अपनी अस्मिता के प्रति सचेत है। फिर भी इस पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्री अब भी पीड़ित है और दलित भी। नारी का पति, पुत्र, परिवार और समाज द्वारा अलग अलग तरीके से शोषण होता है। स्त्री इसका खिलाफ करे तो समाज में यह अनर्थ हो जाएगा। मैत्रेयीजी ने चाक की भूमिका में इस प्रकार कहा है— "पर सुन मेरी बच्ची! अपनी कटी हुई हथेलियाँ न फैलाया, उस बनाने वाले के सामने की पिछली बार बनाते समय जो भूल की थी उसे सुधार ले! नहीं तुझे फिर वही बनना है! फिर औरत! सौ जन्मों तक औरत जब तक मेरे हिस्से का आसमान तेरे और सिर्फ तेरे नाम न कर दिया जाय।"1 समकालीन महिला लेखिकाओं ने नारी शोषण के विरुद्ध अपनी तूलिका चलाई। कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नु भंडारी, ममता कालिया आदि इस कोटि में आती है। इनमें से मैत्रेयी पुष्पा का नाम शीर्षस्थ है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्रियों की दुनिया की बाहरी और भीतरी छटपटाहटों को अभिव्यक्त किया है। मैत्रेयी जी नारी वर्ग को उसका स्वत्व बोध कराना चाहती है। वे नारी में नारीत्व को जागृत करना चाहती है। लेखिका ने महज नारी जीवन पर ही नहीं लिखा है, बल्कि जीवन की तमाम संवेदनाओं को रूपायित करके कई मायनों में वर्तमान रचनाकारों में विशेष कामयाबी भी हाँसिल की है। नारी की कलम से नारी के विषय में जो कुछ लिखा गया है, वह अत्यंत सार्थक और प्रशंसनीय है। मैत्रेयी जी के उपन्यास उनके नारीवादी सारोकार के साक्ष्य है। उनका 'चाक' हिंदी के सर्वोत्तम उपन्यासों में चर्चा के केन्द्र में है। 1997 में प्रकाशित 'चाक' उनका दूसरा उपन्यास है। यह ग्रामीण परिवेश में स्त्री चेतना के प्रसार को आख्यायित करता है। उपन्यास की नायिका सारंग है। वह अपनी फुफेरी बहन रेश्मा की हत्या से विद्रोह हो उठती है। इस गाँव की औरतें पुरुष अहं, शील और सतीत्व की रक्षा के नाम पर बलि चढ़ा दी जाती है। इसका वर्णन लेखिका ने इस प्रकार किया है कि – "इस गाँव के इतिहास में दर्ज दस्तानें बोलती है— रस्सी के फंदे पर झूलती रुक्मणी, कुएँ में कुदनेवाली समदेई, करबन नदी में समाधिस्थ नारायणी – ये बेबस औरतें सीता माइया की तरह 'भूमि प्रवेश' कर अपना शील –

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

सतीत्व की खातिर कुरबान हो गई। ये ही नहीं, और न जाने कितनी..."2 रेशम जो विधवा स्त्री है, अपने पति की मृत्यु के पाँच महीने के बाद वह अवैध गर्भधारण करती है। रेशम को इस पर अपराध बोध नहीं होता। लेकिन परंपरावादी सास घर की इज्जत बचाने के लिए जेठ डोरिया के साथ थापने को तैयार करती है। रेशम के इनकार से क्रुद्ध होकर जेठ डोरिया छल से रेशम की हत्या कर देता है। सारंग अपने पति रंजीत की सहायता से उनका गिरफ्तार कराती है। लेखिका इन शब्दों में युवा विधवा को लेकर समाज की सोच पर सवाल उठाती है— "रेशम विधवा थी – ज़माने के लिए, रीति रिवाज़ों के लिए, शास्त्र पुराणों के चलते घर – गाँव के लिए। विधवा सिर्फ विधवा होती है। वह औरत नहीं रहती फिर। यह बात पता नहीं उसे किसी ने समझाई कि नहीं? किसी ने कहा कि इच्छाओं के रेशमी तार में आग लगा दे रेशम? उसने तो केवल इतना माना कि पेड़ हरा-भरा रहे तो फूल-फल क्यों नहीं लगेंगे? ऐसा हो सकता है कि ऋतु और बल्लरी लता फूले नहीं?"3 सारंग संवेदनशील नारी है। रेशम के वध को जानकर भी गाँववालों की मूकता देखकर सारंग उसकी जाँघों में जूते से मारती है। इससे डोरिया सारंग के गर्दन में दबोचकर कहता है कि – "तेरे छोरा की नार और मसकनी है। फिर भूल जायेगी बिफरना। साली इकबंझिया! पूरी ज़िंदगी निपूती होकर बिसूरती रहना।"4 मैत्रेयी पुष्पा ने चाक में स्त्री शोषण के विविध आयामों को अत्यन्त सहज और यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया है। मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार – "मेरी सारंग अपने अधिकार का मूल्य जानती है। सांस्कृतिक मनो भूमिकाओं में वह किसी पुरुष से ऊपर है। अपमान, घृणा, उपेक्षा जो पति से मिलती है, उसका निदान हमख्याल मित्र के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में है। उसे पति नहीं, साथी चाहिए। साथी मन का भी, तन का भी।"5 मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं में स्त्री के सामने आने वाली अनेक समस्याओं को अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में जो प्रश्न उठाये जाते हैं, वे अत्यंत आधुनिक होते हैं। वे स्त्री विमर्श के सभी आयामों – यौन – मुक्ति, नारी – चेतना, नारी – अधिकार, सहअस्तित्व को विश्लेषित करने में सक्षम हो गया है। नारी अस्मिता को उजागर करना वह अपना धर्म समझती है। नारी चेतना केवल शब्द में नहीं उसे व्यवहार में लाना भी अनिवार्य समझती है। नारी का अपना जीवन है, और सिर्फ महिमा मंड़ित होकर नहीं जीना, अपितु मानव समाज में गरिमापूर्ण, सम्मान एवं अधिकार से जीना है। उसका लेखन बहुस्तरीय, सच्चा, ईमानदार है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी भारतीय नारी है और इन उपन्यासों में नारी विषयक धार्मिक संवेदना के विविध आयामों का यथार्थ अंकन हुआ है।

परिणाम

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में लेखिकाओं के आगमन के साथ ही नारी की स्थिति तथा नारी चेतना को उजागर कर बहुत कुछ लिखा जा रहा हैं। अपने आस-पास त्रासदी एवं शोषण भोग रहे चरित्रों के तनाव को आत्मसात कर साहित्य में उसे स्थान दे रही हैं। हर देश की नारी चाहे वह अनपढ़ हो या पढ़ी -लिखी, अमीर हो या गरीब, उच्चवर्ग की हो या निम्नवर्ग की, गाँव की हो या शहर की, किन्तु सभी जगह स्त्रियों की आँखों के आँसू बोलते हैं।

स्त्री लेखिकाओं ने अपने लेखन के अंतर्गत स्त्री की विभिन्न समस्याओं, उनके शोषण की अभिव्यक्ति करते हुये, उनमें पैदा होती चेतना पर नजर डाली। इन लेखिकाओं ने स्त्री समाज को मुक्ति का मार्ग दिखाया। इन्होंने अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री मुक्ति के विविध साधनों से उसे अवगत कराया। उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, चित्रा मुदगल, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, गीतांजलिश्री आदि अंतिम दशक की ऐसी लेखिकाएं हैं, जिनका लेखन स्त्री संघर्ष एवं स्त्री मुक्ति की वकालत करता है। इन्हें पूरा विश्वास है कि – "समय जरुर लगेगा मगर सीमाएँ हटेगी- भोग्या और देवी के बीच पिसती हुई स्त्री के लिए आत्म सम्मानपूर्ण समाधान खोज ही लेगी। "1

मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य समकालीन लेखिकाओं से वैचारिक दृष्टि से हटकर है। नारी विमर्श को ध्यान में रखकर समकालीन लेखिकाओं ने अपने साहित्य में विचार व्यक्त किये। किन्तु इन सभी लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा अपनी अलग पहचान खड़ी की है। वर्षों से नारी जिस तरह हमारे भारतीय समाज में उपेक्षित और दीन हीन वाली स्थिति में रही उसी स्थिति परिस्थिति से परिचय कराते हुये, मैत्रेयी पुष्पा हमारे समक्ष नारी की नवीन छवि को जन्म देती हैं। मैत्रेयी ने नारी जाति सम्बन्धित समस्त समस्याओं, कुप्रथाओं, रीति रिवाज, कानून, वैधता, अवैधता आदि को अपने उपन्यासों का आधार बनाया है एक नवीन विचारधारा के साथ। यही कारण मैत्रेयी पुष्पा अन्य उपन्यासकारों से अलग हटकर दिखलायी देती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में परम्परावादी विचारधारा को लेकर नारी विमर्श नहीं है बल्कि आधुनिक विचारों को व्यक्त करता नारी विमर्श है, जो साहित्य जगत में चर्चा का विषय बना है। उनके कथा साहित्य में भारतीय ग्राम्य समाज का वर्णन मिलता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के पात्र अपने अधिकारों के प्रति सजग है। "मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास की मुख्य पात्र(स्त्रियाँ) हमेशा से स्वयं सिद्ध नायिकाएँ रही हैं, वह चाहे मंदाकिनी हो, सारंग हो, शीलो या फिर अल्मा या फिर अन्य कोई.....वैसी स्त्रियाँ जो हमारे समाज और उसमें भी खासकर स्त्रियों के जीवन को बदलने का दम रखती हैं। अपने बल पर अपने जीवन चुनने-रचनेवाली, अपने दम पर समाज की दशा-दिशा को मोड़ने का दम रखने वाली सबल स्त्रियाँ। हालाकि यह सबलता उन्हें कोई बेमेल नहीं मिलती, इसके लिए उनका संघर्ष, उनकी बेचैनी, उनकी कश्मकश सब दुर्धर्ष होते हैं। "[2]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

'इदन्नमम' विंध्याचल के तीन पीढ़ियों की कथा है। नारियाँ दुष्प्रवृत्तियों का शिकार होती हुई अपने अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ती है। उपन्यास की केन्द्रीय पात्र मंदाकिनी एक ऐसी संघर्षशील युवती के रूप में सामने आती है जो परिवार और समाज द्वारा नारी के लिए निर्मित बंधनों को तोड़ती है। समाज के कुछ कटु यथार्थ को लेखिका ने मंदाकिनी के संघर्ष के माध्यम से जीवंत अभिव्यक्ति प्रदान की है। मंदा की चरित्र में जीवटता है, साहस है, महत्त्वाकांक्षा और गजब का जुझारु व्यक्तित्व है। मंदा के संदर्भ में राजेन्द्र यादव का कहना है—"महानगरीय मध्यवर्ग की संघर्ष करती और पाँवों के नीचे जमीन की तलाश करती कथा... नारियों के बीच गाँव की मंदा एक अजीब निरीह, निष्कवच, निष्छल दृढ़ संकल्प नारी का व्यक्तित्व लेकर उभरती है। ... उसकी लड़ाई दोहरी है, औरत होने की और वंचितों के अधिकारों की। "[3]

स्त्री विमर्श के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा का प्रमुख स्थान है। इनके उपन्यासों में सामाजिक परिस्थितियों और समस्याओं का ऐसा पटल है, जिसमें ये परिस्थितियाँ और समस्याएँ अभिव्यक्ति पाती हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में इनके उपन्यास न केवल समाज, बल्कि जीवन का भी दर्पण है। उनके उपन्यासों के स्त्री चरित्र सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त होकर अपने जीवन को, अपने समाज को सुखदायक बनाने का प्रयत्न करती हैं। डॉ. निर्मला जैन ने अपने विचार व्यक्त करती हुई कहती हैं - "कड़वी सच्चाई यह है कि पुरुष-प्रधान समाज में सदियों से महिलाओं का दमन और शोषण होता रहा है, समाज में उनकी भूमिका और उनकी सामाजिक हैसियत का निर्धारण पुरुष के द्वारा हुआ है। समाज के हाथों जो दर्जा स्त्री को दिया जाता है, वह किसी हद तक उसकी मानसिक बनावट का नियामक होता है। औपनिवेशिक मानसिकता इस पूरे प्रश्न को पुरुष के खिलाफ स्त्री या पुरुष बनाम स्त्री के ढाँचे में देखने की मजबूरी पैदा करती है। कुल जमा नतीजा यह होता है कि वह या तो पुरुष प्रदत्व परिभाषा में अपनी सार्थकता तलाशती हुई उसके समर्थन में खड़ी हो जाती है या विरोध में। इसलिए तमाम महिला-रचनाकारों ने इसी 'एंग्जाइटी ऑफ ऑथरशिप' के मानसिक चौखटे में रचना कर्म को अंजाम दिया हैं। "[4]

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य की स्त्री चरित्र में सामाजिक सचेतनता विद्यमान हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के स्त्री चरित्र सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त होकर अपने जीवन को, अपने समाज को सुखदायक बनाने का प्रयत्न करती है। 'इदन्नमम' उपन्यास में मंदा अपने पिता के अस्पताल का स्वप्न पूरा करने के लिए निरंतर संघर्ष करती है। गोपालपूरा, खमा, डिकोली, झकनवारा, आदि लगभग पन्द्रह गाँवों में खबर करा दी। पंचायत बुलाकर गाँवों की जनसंख्या दर्ज की। सभी प्रधानों के हस्ताक्षर लेकर अपनी समस्याएँ लिखी। बीमारियों और मृत्यु का भयानक हवाला दिया गया। उस क्षेत्र के एम.एल.ए. राजासाहब से गुजारिश की पर राजासाहब जैसे राजनेता नही चाहते है कि सोनपुरा में अस्पताल बने। फिर भी मंदा की लड़ाई रुकी नहीं। राजासाहब को भी मंदा का साहस देखकर आश्चर्य होता है – "कैसी जहरीली हँसी है लड़की की ! कमाल है, गाँव गाँव नेता हुए जा रहे हैं लोग। पुरुष तो पुरुष इस लड़की की हिम्मत---! न- कुछ उम्र में कैसी उँची बातें करती है।"5 अंततः राजासाहब को भी उसके सामने झुकना पड़ा और अस्पताल में डाक्टर इंद्रनील और कम्पाउंडर को भेज दिया गया।

हमारे समाज में सदियों से नारी पात्र जिस तरह से उपेक्षित रहा है और समाज व स्वयं नारी एक विकृत मानसिकता से जकड़े हुए प्रतीत होते है, स्त्रियों पर अनेक नैतिक तथा सामाजिक वर्जनाएँ लागू की गई। इस संदर्भ में फ्रांसिसी लेखिका सिमोन द बोउमार ने स्त्री जाति की नियति को इस तरह व्यक्त किया है -----"औरत जन्म से ही औरत नहीं होती बल्कि बढ़कर औरत बनती है। कोई भी जैविक मनोवैज्ञानिक या आर्थिक नियति आधुनिक स्त्री के भाग्य की अकेली नियंता नही होती। पूरी सभ्यता ही इस अजीबोगरीब जीव का निर्माण करती है।"6 मैत्रेयी पुष्पा ने उस छवि को तोड़ा है। अपनी स्त्री पात्र के माध्यम से एक सशक्त एवं दृढ़ चरित्र की रचना भी की। यही कारण है कि मैत्रेयी पुष्पा अन्य महिला उपन्यासकारों से पृथक दिखलायी देती है और नारी जगत को नवीन दृष्टिकोण दिखलाती हैं। मंदा का उद्देश्य है ग्रामीण विकास। वह अकेले ही ग्रामीण समाज, शोषित वर्ग और आदिवासी मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष का अभियान चलाती है। गाँव - गाँव जाकर रामायण का अर्थ समझाती। मंदा सामूहिक संघर्ष में विश्वास करती है और उसके लिए लोकशक्ति को जाग्रत करती है। मंदा ने मजदूरों को उनकी मेहनत का महत्त्व और मुल्य समझाती है। फिर आगे बढ़कर अभिलाख सिंह जैसी शक्तिशाली ठेकेदार को चुनौती देती है—"तो क्या करोगे तुम ! क्या कर सकते हो ?अभिलाख, बऊ ने मताई- बाप का हश्र सुना नहीं दिया, गुना भी दिया है। तुम सही-सलामत क्रैशर सलाते रहो, बस इस बात के लिए ठाकुर जू से भजन माँगते रहना, वह सिर झटककर रास्ता काटती हुई आगे बढ़ गई। "7

मंदा को आश्चर्य होता है कि समाज कल्याण हेतु उसके द्वारा संगठित शक्ति का गाँवों पर असर होने लगा है। मंदा का आत्मविश्वास बढ़ गयी। "देखती है मंदाकिनी, गौर से देखती है उनका मुख। गौरवर्ण के प्रौढ़ मुख पर अपूर्व-सी आभा है। जैसे नए विहान की ओर बढ़ते हुए उनका मुख दमक रहा हो ! ऐसे जीवट की कामना तो की थी मंदाकिनी ने, लेकिन कल्पना नहीं की थी कि अन्य गाँव भी उसके अभियान का इस कदर स्वागत करेंगे। ग्रामीण औरतें इस हिम्मत से सामने आ जाएँगी और जबर-पैसेवाले लोगों से भिड़ने-जूझने को आगे बढ़ चलेंगी। "8

मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा जैसे युवती के रूप में उपन्यास यह प्रभाव छोड़ने में पूरी तरह सफल रहा है कि अब नारी शक्ति जाग उठी है। अब नारी सामाजिक ढाँचे को तोड़ती हुई न केवल वह अपने अधिकारों को सुरक्षित करेगी वरन समाज को नई दिशा में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

आगे बढ़ायेगी। मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा के संघर्ष के द्वारा यह दिखाया है कि आज नारी अपने अधिकारों के लिए दृढ़ता व आत्मविश्वास अपने अंदर जगा चुकी है। मुक्ति की छटपटाहट निरंतर उसे संघर्ष के लिए प्रेरित कर रही है। पुरानी मान्यताओं को लकीरों को वह पार करने लगी है। तसलीमा नसरीन के अनुसार---"जिस दिन यह समाज स्त्री शरीर का नही-शरीर के अंग-प्रत्यंग का नहीं, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य सीख जाएगा, सिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृत होगी।"9 'इदन्नमम' की नारी पात्र मंदा और मैत्रेयी पुष्पा की अन्य उपन्यासों के नारी पात्र में कुछ अंतर दिखाई देती हैं। अन्य उपन्यासों के नारी जैसे— सारंग, अल्मा, शीलो, भूवन मोहिनी आदि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया हैं। लेकिन मंदा की संघर्ष सदा समाज कल्याण है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना सम्पन्न नारी पात्रों में प्रायः ऐसी ग्रामीण नारियों का चित्रण हुआ हैं, जिनमें वर्ग-संघर्ष की भावना तीव्र रूप से चिह्नित है। अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने के कारण उनमें शोर्षक वर्ग के प्रति विद्रोह की भावना है। इनके यहाँ कुछ नारी पात्र सक्रिय तथा कुछ निष्क्रय रूप से राजनीतिक क्रियाकलापों में भाग लेते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में यह महसूस किया गया है कि यदि महिलाओं को निर्णयकारिता के स्तर पर पहुँचना सुलभ कर दिया जाए तो महिलाओं की समस्याओं को सुलझाने में सरलता होगी। आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के विभिन्न कार्यक्रमों को सम्पादित करने में भी महिलाओं को रचनात्मक क्षमता का सदुपयोग हो सकेगा। यह दृष्टिकोण भी सामने आया है कि महिला सशक्तीकरण के लिए महिलाओं को निर्णय करने की प्रक्रिया से जोड़ना होगा, चाहे यह घर की चार दीवारों में लिए जानेवाले निर्णय हो या सरकारी स्तर पर। अतः राजनीतिक सहभागिता को बढ़कर महिला सशक्तीकरण के प्रयासों को सार्थक बनाया जा सकता हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी को अधिक से अधिक राजनीति के साथ जोड़ने का प्रयास किया हैं। उसका यह भी मानना है कि जिस नारी के पास सत्ता हैं वो अपने अधिकार का उपयोग करें। कितनी ही स्त्रियाँ सत्ता में आने के बाद यह देखने को मिलता है कि- "समाज से लेकर राजनीति तक यह बात अक्सर देखने में आती है कि औरत आदमी के स्वर में स्वर ही मिलाती है। वह पुरुष चाहे पति हो, बेटा हो या प्रेमी हो, वह मर्दाने पक्ष में झुकी रहती हैं, वकील की तरह भी और लठैत की तरह भी। यह सब नहीं दिखता हमें तो वह ऐसी ही मालिक हो जाना चाहती हैं, जैसा की मर्द होता है। वह हर हाल में पुरुष की नकल करती है। "10
मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यासों में कुछ ऐसे स्त्री पात्र सामने लाती है जिन्होंने भ्रष्ट राजनीति, राजनेताओं, वोट की राजनीति, धोखाधड़ी करनेवाले राजनेताओं के खिलाफ संघर्ष का अभियान चलाती है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर दस्तक देते भारतीय ग्रामीण परिवेश का दर्पण है। मैत्रेयी ने गाँव की गंदी राजनीति को करीब से देखा है। उसी राजनीति में गाँव की औरतों को खड़ी करती है। 'इदन्नमम' उपन्यास की स्त्री पात्र मंदाकिनी राजनीतिक व्यवस्था के साथ संघर्ष करती है। वह पाँचवी कक्षा तक पढ़ी हुई है, फिर भी एम.एल.ए.राजासाहब को भी झुकने के लिए मजबूर करती है । गाँव वालों ने मंदा का साथ दिया। अंत में गाँव की मंदा ने राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर की लोकतांत्रिक प्रणाली में गाँव का अस्तित्व सिद्ध किया।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने कथा साहित्य में स्त्रियों को न्यायतंत्र के विरुद्ध लड़ते हुए प्रदर्शित किया है। 'इदन्नमम' उपन्यास के कथा क्षेत्र सोनपुरा, श्यामली आदि लगभग 15 गाँवों की माटी से जुड़ा है। यह सभी गाँव अत्यंत पिछड़े और राजनेताओं के वक्र दृष्टि का शिकार हैं। सोनपुरा गाँव की लड़की मंदा सर्वप्रथम अपने पिता का सपना पूरा करने की कोशिश करते है। पचांयत बुलाकर गाँवों की सभी प्रधानों के हस्ताक्षर लेकर गाँव की जनसंख्या दर्ज की और अपनी परेशानियाँ लिखी। इस क्षेत्र के एम.एल.ए. राजासाहब है। मंदा तय किया कि----"अबकी बार हम किसी आफिस में नहीं, सीधे राजा साहब के पास भेजेंगे अपना प्रार्थना पत्र। प्रधान काका और कायलेवाले महाराज इसे ले जाएँगे स्वयं अपने हाथो। राजा साहब यहाँ के एम.एल.ए. है। मन्त्री है। प्रतिनिधि हैं। जिम्मेदार है। यह कहो कि भाई-बाप हैं इस क्षेत्र के। कुछ-न-कुछ सोचेंगे अवश्य।"11 लेकिन मंदा क्या जाने राजनीति क्षेत्र का षड़यंत्र। इस बात पर महाराज टीकमसिंह ने मंदा को समझाने लगे कि---- "राजकाज में तेजी लाना अपने हाथ की बात नहीं। वे लोग अपने तरीके से करतें हैं हर काम। नौकरशाह और राजनेताओं के हाथ का खिलौना हो गया है हमारा जीवन। यहाँ प्रजातन्त्र नहीं, शोषणतन्त्र लागू है। "12तब मंदा ने निश्चय किया राजनेताओं को सही रास्ते में लाने के लिए एक ही उपाय है चुनाव में वोट न डालने का निर्णय। मंदा ने राजनेताओं को चुनौती देती है ---"सो क्या करें? अबकी बार ठान लिया है कि हम कहे की नही करे की परतीत करेंगे। और अगर नही तो ऐन खाली उठा ले जावें पेटी आपके आदमी। वोट नही पड़ेगा एक भी। "13 अंत राजा साहब को उसके सामने झुकना पड़ा और मंदा अपनी मंजिल तक पहुँच गयी।

मैत्रेयी पुष्पा के रचनाओं की स्त्री भले ही गाँव की है, किन्तु वह अपना जीवन स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है। आधुनिक नारी आज नई संकल्प-शक्ति के साथ जीने लगी है। अपने अधिकारों के प्रति वह सचेत हो चुकी है। निर्मल वर्मा के अनुसार ---- "नारी अपने अधिकारों की इच्छा करे, अधिकारी भी बने, अधिकारी के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए। "14

मंदा की दूसरी लड़ाई है गाँव में स्कूल स्थापना। मंदा देख रही है कि स्कूल होते हुए भी दूसरे स्कूल खोले जा रहे है। उधर जहाँ स्कूल नही है, जहाँ जिसकी जरुरत है वहाँ खोले जाने के संदर्भ में कोई चर्चा नही। मंदा कहती है----- "अबकी बार हम भी ऐन चेतन्त हैं। वे बेईमानी से नहीं चूक रहे तो हम ईमानदारी से क्यों चुकें। देखते हैं, ये कितनी चालाकी चलते हैं हमारे साथ। अपनी आँखों देखकर आए है हम। मबूसा गए थे, रिश्तेदारी है हमारी। वहाँ एक स्कूल होते हुए भी उसके बराबर में दूसरा बन गया। हमने पूछा, भइया, तुम्हारे गाँव में यह दूसरा स्कूल ? बोल, पहला खारिज कर दिया ओवरसियर ने और प्रधानजी ने। अब यह मिलीभगत

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

ही तो एसा अन्धेर कर रही है हमें सो ऐन उजागर हैं। कहनेवालों ने भी हमें बता दिया कि पन्द्रह प्रतिसत कमीसन लिया है ओवरसियर ने। कुछ ऊपर भी पहुँचाया होगा, ऊपरवालों ने और ऊपर। और एम.एल.ए. जी के लिए सत प्रतिसत वोट। "[1]5 मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं में यह समाचार दिया है कि –भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अकर्मण्यता, अवसरवाद, स्वार्थलिप्सा आदि से सरकारी व्यवस्था जर्जर बन चुकी है।

राजनीति के द्वारा समाज का कल्याण संभव होता है। राजनीतिक चेतना का अर्थ ही है----"वह चेतना जो मनुष्य में अपने हक, अधिकार और कर्तव्यों का निर्धारण करे। राजनीतिक चेतना द्वारा ही मनुष्य समाज, राज्य, राष्ट्र यहाँ तक कि विश्व में अपना इच्छित स्थान निरूपित करता है। चेतना ही राजनीति को संयमित, अनुशासित और कल्याणकारी बनाती है। "16

महिला सशक्तीकरण के लिए महिलाओं को निर्णय करने की प्रक्रिया से जोड़ना होगा, चाहे यह घर की चार दीवारों में लिए जानेवाले निर्णय हो या सरकारी स्तर पर। अतः राजनीतिक सहभागिता को बढ़कर महिला सशक्तीकरण के प्रयासों को सार्थक बनाया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में यह महसूस किया गया है कि यदि महिलाओं को निर्णयकारिता के स्तर पर पहुँचना सुलभ कर दिया जाए तो महिलाओं की समस्याओं को सुलझाने में सरलता होगी। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में सारंग, 'अल्मा कबूतरी' में अल्मा ने चुनाव तंत्र में भाग लिया है, परंतु 'इदन्नमम' कुछ अलग है। यहाँ स्त्री पात्र भ्रष्ट राजनेताओं के विरुद्ध खड़ा होकर पुरुष सत्ता की राजनीतिक षड़यंत्र का पर्दाफाश किया है।

'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीति का एक ऐसा चेहरा सामने लाया है जो आदिवासी, मजदूरों जैसा पिछड़े लोगों को वोट बैंक के सिवाय कुछ नही मानता है। इन बरसों से चली आयी व्यवस्था को बदलने की कौशिश मंदा करती है। मैत्रेयी ने अपने उपन्यासों में वोट की राजनीति करनेवाले राजनेताओं और उनके गिरोहों का पर्दा फाश किया हैं। डॉ. क्षितिज धुमाठु के राष्ट्रों में ----"चुनाव घोषित होने पर नेता लोग अपने-अपने चुनाव क्षेत्र के दौर करके मतदाताओं की स्थिति का अंकन करते हैं। आज लोक प्रतिनिधि को ग्राम का विकास न करने पर प्रश्न पूछने वाले मतदाता निर्माण हो चुके हैं। निष्क्रिय उम्मीदवार को वोट देने से इन्कार करते हैं। इस उपन्यास के राजासाहब की भी यही स्थिति होने के कारण वे रात-बे-रात चुनाव क्षेत्र का दौरा करते हैं, वे कायले वाले महाराज से मिलने सोनपुरा आते हैं, सोनपुरा के लोग उनकी निष्क्रियता पर आलोचना करते हुए आने वाले चुनाव में मतदान पर बहिष्कार करने की सूचना देते हैं। "17मंदा ने लोकशक्ति को जाग्रत करती है और राजनीति के वोट बैंक को बंद करना चाहती है। इसके लिए सोनपुरा के आसपास के गाँवों में दौर करती है। "उसके दौर तेजी पकड़ने लगे। नरसिंहतगढ़, खमा, डिकौली के अलावा पहाड़ो पर लगे क्रैशरों पर जाना होता है। प्रत्याशियों के कार्यकर्ता सौ-पचास रुपए या अद्धा बोतल शराब दो-चार दिन लगातार पिलाकर भरमा ले जाएँगे उन्हें। गोपालपुरा की ठाकुराइन को लेकर वह गाँव-गाँव गई, पहाड़ियों पर फिरती डोली। समझाया कि वोट नही देना है तुमको, लालच में नही आना है किसी भी तरह। "18

मंदा ने जनमानस को जाग्रत करके राजनेताओं को चुनाव पर बहिष्कार कर अपना संघर्ष आरंभ करती है। गाँव के लोगों को वह वोट की दलाली करने से सावधान रहने की बातें समझाती है। मंदा ने गाँवों में सलाह करके गोपालपुरा में वोट की राजनीति के संदर्भ बैठक बुलाकर जनसाधारण को सावधान किया। "सुख-दुख, लाभ-हानि, खुशी-गमी हमें नही व्यापती, हम तो इनके इस्तेमाल की चीज हैं, जिसे वे चाहे जब प्रयोग करें, चाहे जब खारिज कर दें। मुँह देखा, नासमझ दीन-हीन है, चाहे तो भीख दें, चाहें तो हाथ खींच लों। वे गुड़ डालेंगे, हम चोटों की तरह इकटठे हो जाएँगे। "[1]9

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने चिंतनपरक लेखन द्वारा पुरुष सत्ता की राजनीतिक षड़यंत्र का पर्दाफाश किया है। उनकी ग्रामीण नारी आंचलिक भूमि पर संगठित होकर स्त्री शक्ति के रूप में विकसित होती है और अंत में राजनीतिक जीवन में प्रवेश करती दिखाई देती है। अपने स्वतन्त्र अस्तित्व के प्रति जागरूक नारी राजनीति में अत्यन्त सफल दिखाई देती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री अपने व्यक्तित्व को स्थापित कर रही है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास की नारी पात्र शक्ति, विद्रोह के प्रतीक रूप में गढ़ी गई है। जहाँ पराजय, हताशा और कुंठा के बावजूद स्वप्न और सृजन की अनगिनत सम्भावनाएँ है। मंदा के माध्यम से इस दो मुँहे समाज को यही संदेश दिया है कि जिस प्रकार पुरुष के हर अपराध व पाप समाज में क्षम्य माने जाते है उसी प्रकार स्त्री भी अपने छोटे से अपराध को अक्षम्य मान अपने को स्वाहा न कर समाज से अपने हर अधिकार मांगने चाहिए। मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री पात्र स्वयं की व्यक्तिगत लड़ाई के बदले सामाजिक तथा सामूहिक संघर्ष भी लड़ते है। उनकी नारी चरित्र वर्चस्व को चुनौती देकर अपनी अलग राहों के ऐलान और अन्वेषण में स्त्री सशक्तीकरण का महती स्वप्न तैयार करती है। मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश व प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद नारी की महत्त्वपूर्ण और गरिमामय भूमिका की प्रतिष्ठापना हुई। मंदा अपने सारें निर्णय स्वयं लेती है। बलात्कार जैसी घटना से वह टूटती नही अपितु अपना प्यार ठुकराकर दूसरों की भलाई करने के रास्ते में चल पड़ती है। "गहरे अच्छवासों के बीच तेज गति से चल दी मंदाकिनी। किसी की पदचाप अब भी उसके पीछे है। "20

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

निष्कर्ष

इस शब्दयुग्म से बहुत से लोगों का साहित्यिक जायका कड़वा हो जाता है। अगर ऐसा अनुभव है तो यह कोई विचित्र बात भी नहीं है। सबको अपनी तरह से सोचने का अधिकार है। बात यह भी है कि स्त्री विमर्श के चलते साहित्य में अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं, जैसे- यह विमर्श आखिर किसके हित में है? यह एक पुरुष-विरोधी अभियान है। तीसरी बात कि यह विचार विदेशों से आयातित है, जो भारतीय जीवन-मूल्यों को ध्वस्त कर रहा है।

ऊपर की मान्यता प्राप्त बातों का उत्तर न सहज है, न आसान। नहीं बताया जा सकता कि स्त्री विमर्श स्त्री के हित में है और पुरुष वर्ग का अहित करने के लिए लागू हुआ है। मामला यहीं से उलझने लगता है, जब लिखित या व्यावहारिक तौर पर स्त्री पितृसत्ता के सौतेले और कठोर व्यवहारों पर सीधी नहीं, मरखनी गाय की तरह सींग हिलाने लगती है, यानी मुझे तुम्हारा निजाम मंजूर नहीं। हमारा पुरुष समाज देखता है, अरे यह क्या हुआ, त्यागमयी सहिष्णु नारी, सेवाभावी स्त्री, अपने स्वामी के इशारों पर उठने-बैठने और चलने-फिरने वाली औरत और अपनी दसों इंद्रियों को निग्रह के हवाले रखने वाली सती, आज कैसी उल्टी-सीधी बातें करने लगी है!

मरखनी गाय को पीटने का विधान है, मुंहजोर और जिद्दी औरत की अक्ल ठिकाने लगाने वालों को भी दोषी नहीं माना जाता, क्योंकि औरत की जिद खुद एक अपराध है। जिद भी किन बातों की? उन बातों की, जिन पर पुरुष सत्ता का हुक्मनामा लागू रहा है। पिता, पति और पुत्र इन आज्ञा-पत्रों के मालिक माने गए हैं।

मगर स्त्री विमर्श! यह पुरुष-विरोधी मुहिम नहीं, तो क्या है? वह अपने मनुष्यगत अधिकारों की मांग करती है- वह शिक्षा का अधिकार मांगती है, घर की चौखट लांघने का उच्छृंखल आचरण करती है। वह विवाह में अपना फैसला देना चाहती है, मतलब कि कन्यादान को चुनौती देती है। वह विवाह से भी पहले 'करिअर' बनाने की बात करती है, यानी परंपरा से चले आ रहे उम्र-विधान को टंगड़ी मारती है। वह वंश चलाने के लिए अपनी इच्छा की बात करती है। संतान कब और कितनी, यह सवाल उसका अपना है, क्योंकि यह उसके तन-मन से जुड़ा मुद्दा है। वह कहां जाएगी, कहां नहीं, इसका फैसला भी खुद ही करेगी। किसी के साथ जाएगी या अकेली, वह खुद तय करेगी। क्या पहनेगी, यह भी उसी का अपना चुनाव होगा।

यह औरत आजाद है या आवारा? यह भारतीय स्त्री कैसे हो सकती है? यह भारतीय औरत के रूप में विदेशिनी है। यह जो कुछ करना चाहती है, सब आयातित स्त्री विमर्श की देन है। इसे रोका जाना चाहिए। अगर ऐसा हमारे सामाजिक और साहित्यिक लोग मानते हैं तो हम उनको दोषी नहीं ठहरा सकते, क्योंकि व्यवस्था छिन्न भिन्न हो जाने का डर अपनी जगह मामूली नहीं होता। जमींदार की तरह रहे स्त्री के मालिक लोग उसको वे हक कैसे दे सकते हैं, जिन्हें बड़े कौशल से हथिया कर उन्होंने औरत को गुलाम बनाया है। धरती पर धन-दौलत, सोना-चांदी, महल-हवेली जैसी चीजें मिल जाती हैं। मगर गुलाम और दासी तो खुद ही पालने-पोसने पड़ते हैं, पालन भी ऐसा रहे कि वे भागने या छूटने के लिए खुद को अपाहिज समझें। ऐसा होता आया है।

इस व्यवस्था का कमाल देखिए कि इसने कितना लंबा जीवन पाया है और आज जब व्यवस्थाओं के लिए खतरा खड़ा होता है कि उनके गुलाम विरोध ही नहीं, विद्रोह पर उतारू हैं, तो उन्होंने अपना निजाम और भी कठोर तथा क्रूर बना दिया है। विदेशों में शिक्षा पाने और कमाने वाले सपूतों के पिताओं का वश चले तो वे स्त्री को भारतीय नियमावली के बमों से उड़ा दें। 'आदर्श बहू' के खंजर तो औरत पर रोज ही चलते हैं। समाज में स्त्री के लिए दरिंदगी का जो सिलसिला चला है, वह इसी डर का परिणाम है कि औरत उनके हाथ से निकल रही है। यहां हम यह कह कर मर्दों को माफी नहीं दे सकते कि वे अनपढ़, अशिक्षित या बेहाल, कंगाल हैं जो औरत पर जुल्म करते हैं। नहीं, उनमें कोई भूखा-नंगा नहीं होता।

तुम अपने हक मांगोगी, जिसमें तुम्हारी आजादी होगी कि तुम खुले आसमान के नीचे निकलोगी तो हम तुम्हें रोकेंगे नहीं, तुम्हारा शिकार करेंगे, अपनी ताकत दिखाएंगे। फिर भी अगर तुम हमें पराजित करने की ठानोगी तो हम झुंड बांध कर आएंगे और तुम्हें धराशायी कर देंगे। औरत मर्द के लिए दहशत का विषय बने? धिक्कार है ऐसी मर्दानगी पर!

हमारे समाज का ऐसा चेहरा और स्त्रियों की जांबाज मुहिम!

मुहिम में रणनीतियों का उपयोग न किया गया हो तो दरिंदगी भरे समाज से, सड़ी-गली परंपराओं की बजबजाती दल-दल से और आजकल शानदार चमकदार तस्वीर दिखाते बाजार से खतरों के उफान उमड़ते ही रहेंगे। क्या स्त्रियों, नवयुवतियों को अपने लिए ऐसे संकल्प नहीं लेने होंगे, जो उनकी मुहिम को मजबूत कर सकें? रूढ़ियों का सड़ांध भरा कीचड़ औरत का रास्ता रोक देता

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

है, इसका उल्लेख हमें आज ही नहीं, पिछली शताब्दी के शुरुआती दौर से ही मिलने लगता है। बात बस गौर करने की है।

साहित्य में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान से लेकर उनके समय की लेखिकाओं ने अपनी गद्य रचनाओं में उसी आग के दर्शन कराए हैं, जिसे आज हम स्त्री विमर्श के नाम से जानते हैं। उनके भीतर वही विरोध-प्रतिरोध थे, मर्दानी व्यवस्था के प्रति जो आज हमारे हैं। हां, उनके प्रतिकार के ढंग थोड़े भिन्न थे। फिर भी स्त्री नाइंसाफियों के खिलाफ बोल रही थी और पुरुष परंपरा को बाकायदा चुनौती देती है, पुलिस से जूझती है, जेल जाती है, यानी घर की चौखट हर हालत में लांघती है।

यही धारा तो बहती चली आई कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी से लेकर मृदुला गर्ग, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, गीतांजलीश्री, अनामिका से और आगे तक। स्त्री की वह छवि साहित्य में अपना होना दर्ज करती गई, जो अपने मनुष्यगत अधिकारों के लिए सजग है और उनको हासिल करने के लिए अग्रसर। स्त्री द्वारा लागू किए गए इस विधान को आप किसी नाम से पुकारिए, जब वरक खोलेंगे तो एक चेतना संपन्न लोकतांत्रिक स्त्री का दर्शन होगा।

साहित्य के ऐसे सफे ही सामाजिक स्तर पर अपना असर छोड़ते हैं। पढ़ने वाले के अंतरमन में जीवित रहते हैं, क्योंकि इनका वास्ता पाठक से उसके एकांत में होता है। अगर आप गौर करें तो पाएंगे कि स्त्रियों का ऐसा लेखन, जिसमें वे अपनी नागरिकता का दावा करती हैं। किसी या किन्हीं पुरुषों के विरोध में नहीं है, बस ऐसा लगता है कि क्योंकि हक छीनने वालों से अधिकार वापस लेना उनसे दुश्मनी ठानने जैसा हो जाता है। सही मायने में तो बात यह है कि स्त्रियों को पुरुषों के रूप में शासक नहीं, सहयोगी और साथी चाहिए, यही स्त्री लेखन का मकसद है और होना भी चाहिए।

अपने इस मकसद के लिए उन रचनाकारों को भी सचेत होना पड़ेगा, जिनको हम लेखिका कहते हैं। उनको भी आत्मालोचन की जरूरत है। जरूरत है कि जिस मुहिम को हमारी पूर्वज लेखिकाओं ने पूरे साहस के साथ छेड़ा, बिना समझौते और सौदेबाजी के निभाया, उसी मुहिम को हम यहां तक किस रूप में लाए हैं? क्या हमने उस बहादुर लेखन का फलक विस्तृत किया है या उतना ही रहने दिया? या नया भी कुछ जोड़ा है? समाज में स्त्री के लिए फैली हुई नियमों की कुरूपता, सजाओं की सजावट या सजावटों की वीभत्सता को खुली आंखों देखते हुए हमने क्या फैसले किए?

इक्कीसवीं सदी में जबसे 'युवा लेखन' का फतवा चला है, लेखन की दुनिया में खासी तेजी आई है। लेखिकाओं की भरी-पूरी जमात हमें आश्वस्त करती है। किताबें और किताबें। लोकार्पण और लोकार्पण। इनाम, खिताब, पुरस्कार जैसा बहुत कुछ। प्रकाशक, संपादक भी अपने-अपने स्टाल लेकर हाजिर। अपने-अपने जलसों की आवृत्तियां। कैसा उत्सवमय समां है। कौन कहता है कि यह दरिंदगी और दहशत भरा समय और समाज है? साहित्य जगत तो यहां आनंदलोक के साथ है। नाच-गाने और डीजे। शानदार पार्टियां और आपसी रिश्तों के जश्न। ऐसा लगता है जैसे कितनी ही कालजयी रचनाएं आई हैं।

मगर इस समय की कलमकार के अपने रूप क्या हैं? युवा के सिवा कुछ भी नहीं, यह युवा लेखिका का फतवा किस दोस्त या दुश्मन ने चलाया कि इस समय की रचनाकार अपनी उम्र का असली सन तक अपने बायोडाटा में दर्ज नहीं करतीं, क्योंकि उम्र जगजाहिर करना युवा लेखन के दायरे से खारिज होना है। वे लेखन के हल्केपन की परवाह नहीं करतीं, जवानी को संजोए रखने की चिंता में हैं। इसी तर्ज पर कि रचना में कमी-बेसी से डर नहीं लगता साब, वयस्क कहे जाने से डर लगता है। परवाह नहीं उम्र पैंतालीस से पचास पर पहुंच जाए, युवा कहलाने का अनिर्वचनीय सुख मिलता रहे।

हम बड़े गौर से देखते हैं, कोई रचना मिले जो अपनी गंभीरता के साथ मेच्योर हो, जो देश के सामाजिक हालात से संबंधित राजनीतिक दायरों के अनुभवों पर आधारित हो, जो स्त्री का हस्तक्षेप पंचायतों से लेकर विधानसभा और संसद तक रेखांकित करे। जो धार्मिक और राजनीतिक गठजोड़ का परदाफाश करे। यानी जो 'जिंदगीनामा', 'महाभोज', 'अनित्य', 'हमारा शहर उस बरस', 'आंवा' से आगे का आख्यान बने। नहीं तो इक्कीसवीं सदी का रचनात्मक इतिहास दर्ज कौन करेगा? क्या इसका जिम्मा भी युवा लेखिकाओं ने उन पर ही छोड़ा है, जिन्हें वे बीतती हुई पिछली पीढ़ी मानती हैं। संभव है यह, क्योंकि आज की रचनाओं में लिव इन रिलेशनशिप, अफेयर, मैरिज, डाइवोर्स और कितने-कितने लोगों से यौन सुख का रिफ्रेशमेंट यहां तक कि एग्जाम के लिए भी बायफ्रेंड से यौन सुख की खुराक... उफ यह स्त्री विमर्श! स्त्री का मनुष्य रूप केवल यही है? उसने अपने हक-हकूक केवल इसी स्थिति के लिए लेने चाहे थे?

माना कि श्लील-अश्लील, मर्यादा, नैतिकता और चारित्रिक दृढ़ता के पैमाने औरत को लेकर बदलने की जरूरत थी और वे बदले भी हैं। यौन सुख को स्त्री के दमन का आधार बनाया जाता रहा है, इससे भी औरत ने इनकार किया है। उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए जो बाड़ें, बंदिशें थीं, उनको तोड़ा है। नतीजे हमारे सामने हैं कि वह हर कहीं उन क्षेत्रों में है, जिनको अब तक पुरुषों के लिए आरक्षित माना जाता था। यह स्वागतयोग्य कदम है, यह स्त्री विमर्श का चमकदार इलाका है। इस इलाके पर रचनाएं आनी चाहिए।

लेकिन सोचना यह भी पड़ता है कि इस उपलब्धियों के इलाके को धूमिल कौन कर रहा है? हमारी रचनाएं क्यों नहीं कहतीं कि दहेज का विरोध करने वाली दुल्हनों, यह भी कहो कि बाजार की गुलामी नहीं करोगी। शादी का पैकेज बेचते दुकानदार तुमको गुलामी के मंच पर ऐसे वीभत्स शृंगार में पेश कर देते हैं, जहां तुम्हारा वजूद बचता ही नहीं। बचती है एक चमकीले सुनहरे जेवरों में मढ़ी और रेशमी कपड़ों के गोटे-पट्टे, सलमा-सितारे जैसे चमकते पत्थरों से जड़े लहंगे ओढ़नी के तंबू में ढंकी युवती, जिसके वास्तविक चेहरे को पहचानना मुश्किल होता है। कमाल है कि साहित्य और समाज में आप अपनी पहचान की बात करती हैं। देखती नहीं, हर चौराहे पर होर्डिंग में स्त्री का अधनंगा और लगभग नंगा शरीर लटका रहता है? कभी इसके खिलाफ भी लेखकीय मुहिम छेड़ो और इसे बाजार की नीतियों से लेकर सरकार के नियमों से जोड़ो। जोड़ो कि आखिर औरत किस कानून के तहत विज्ञापनों में अपनी देह के साथ बिक्री पर चढ़ी हुई है? इन बिकने वाली युवतियों में इनकार का साहस भरो। मत भूलो कि साहित्य में भी तुम्हारे सामने पुरुष वर्ग का वह बड़ा हिस्सा होगा, जो तुम्हारा ध्यान कलम से हटा कर वहीं ले जाएगा, जहां उसकी मस्ती का इलाका है। वह तुम्हें तारीफों का नशा पिलाएगा और मदहोश कर देगा। स्त्री विमर्श जब न तब ऐसे ही तो ढेर होता रहा है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य के स्त्री लेखन की पस्तमिजाजी का यही कारण तो नहीं कि औसत रचनाओं का धूम धड़ाका!

कितना चंचल वक्त है, ऊपर से आपकी उम्र भी युवा युवा! हाथ में कलम है और माहौल जवां जवां! फिर क्या-क्या न लिख दे कोई? बस स्त्री अगर अपनी प्रखरता में शोषितों, वंचितों और छद्म के शिकारों की कथाएं लिखने में लिहाज करती रही तो उन आशिकों और साहित्य के मालिकों की मेहरबानी कि उसकी कलम ने वे तेवर नहीं पकड़े जो 'दिलोदानिश' लिखते। क्या जो लेखिकाएं अपने आप को मुक्ति की मशाल लिए हुए दिखा रही हैं, उस मशाल की लौ धुंआ-धुंआ नहीं है? मशाल तो उनकी ही लौ दे रही है, जिनको आज पिछली पीढ़ी माना जा रहा है, क्योंकि रचनाओं को उम्र की दरकार नहीं होती। भले आप सोलह साल की बनी रहें, रचना तो अपने परिपक्व रूप को ही धारण करने का आग्रह रखती है और उसका नाम भी तभी साहित्य में मुकम्मल रूप से दर्ज होता है। नहीं तो, यों तो फिल्में भी सिनेमाघरों में हर हफ्ते लगती हैं और उतर जाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्मिता नायर -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य का अनुशीलन पृष्ठ -123
2. स्मिता नायर मैत्रेयी- पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ -66
3. मैत्रेयी पुष्पा- कस्तूरी कुंडल बसै पृष्ठ -13
4. मैत्रेयी पुष्पा -चाक पृष्ठ- 19,20
5. स्मिता नायर -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ- 120
6. मैत्रेयी पुष्पा -आंगन पाखी पृष्ठ -77
7. स्मिता नायर -मैत्रयी के कथा साहित्य में नारी शोषण और शोषण के विरुद्ध विद्रोह पृष्ठ- 123
8. मैत्रेयी पुष्पा- फैसला ललमनिया पृष्ठ -8
9. स्मिता नायर- मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ- 99
10. मैत्रेयी पुष्पा- इदन्नमम पृष्ठ- 199
11. स्मिता नायर -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ -14
12. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृ. 206
13. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृ. 354
14.वर्मा निर्मल, 'महादेवी एक मूल्यांकन', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (1969), पृ. 208
15. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृ. 265
16.डॉ. सरोज यादव, 'हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में राजनीतिक चेतना', पृ. 30
17. डॉ. क्षितिज धुमाठ, 'बीसवी सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृतिमूलक अनुशीलन', पृ.132
18. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृ. 409
19. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृ. 399
20. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृ.500

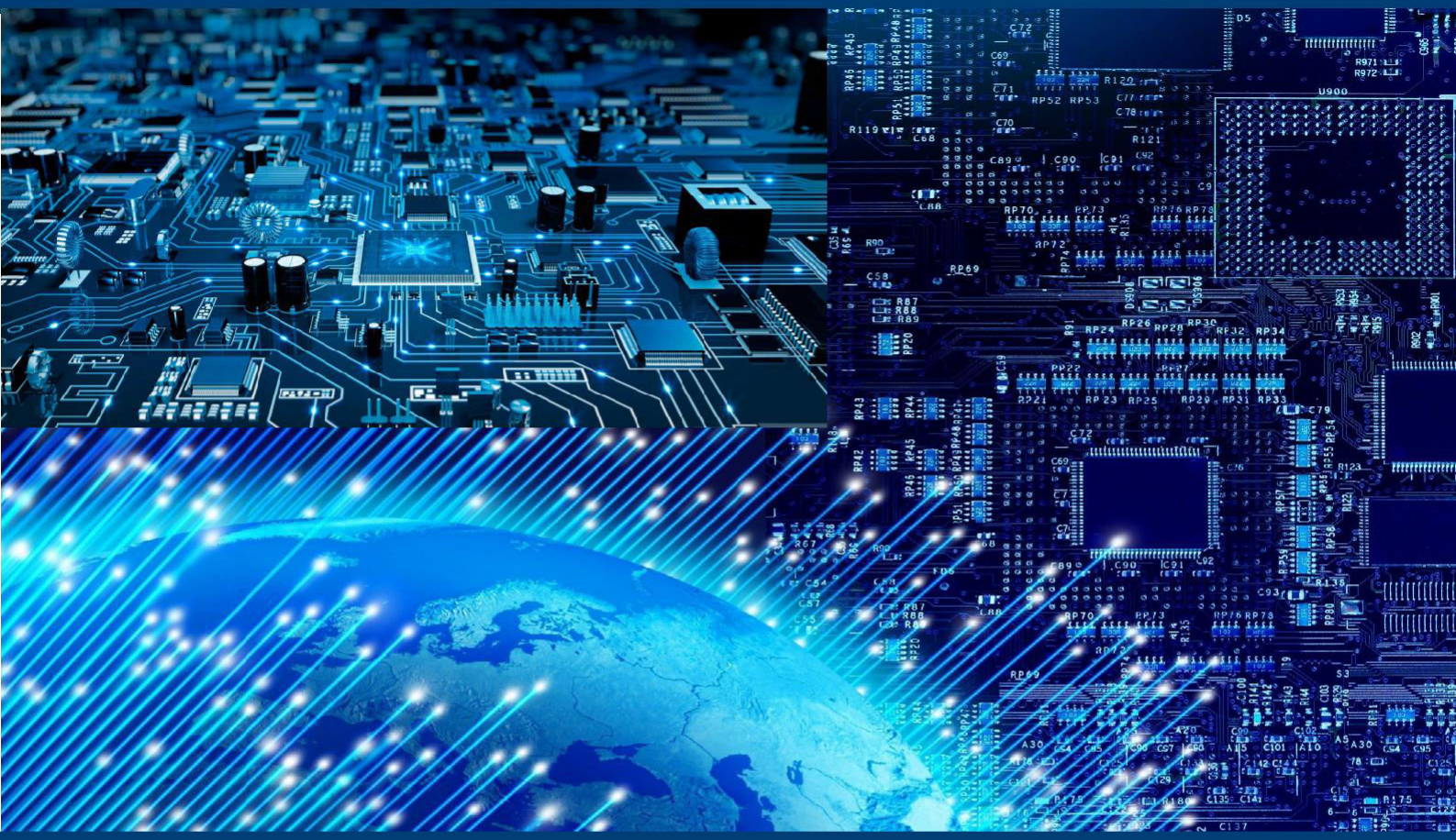

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |